रहीम के दोहे

1. ***कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।***
बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत ।।1।।

प्रसंग:- रहीम दास जी के दोहे के माध्यम से सच्चे मित्र की परिभाषा को बताया है।
व्याख्या:- रहीम दास जी कहते है कि जब हमारे पास संपत्ति होती है तो लोग अपने आप हमारे सगे, रिश्तेदार और मित्र बनने की प्रयास करते है लेकिन सच्चे मित्र वो ही होते है, जो विपत्ति या विपदा आने पर भी हमारे साथ बने रहते है। वही हमारे सच्चे मित्र होते है उनका साथ हमें कभी नहीं छोड़ना चाहिए।
शब्दार्थ:- कहि – कहना, **संपति** – धन, **सगे** – रिश्तेदार (अपने), **बनत** – बनते है, **रीत** – तरीका, **बिपति** – संकट (कठिनाई), **कसौटी जे कसे** – बुरे समय में जो साथ में, **तेई** – वे ही, **साँचे** – सच्चे, **मीत** – मित्र (अपने)।

2. ***जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।***
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाँड़ति छोह ।।2।।

प्रसंग:- इस दोहे में रहीम दास जी ने जल के प्रति मछली के एक तरफा प्रेम को दर्शाया है।
व्याख्या:- रहीम दास जी कहते है कि जब मछली पकड़ने के लिए जल में जाल डाला जाता है तो जल बहकर बाहर निकल जाता है। वह मछली के प्रति अपना मोह त्याग देता है लेकिन मछली का प्रेम जल के प्रति इतना अधिक होता है कि वो जल से अलग होते ही अपने प्राण त्याग देती है, यही सच्चा प्रेम है।
शब्दार्थ:- परे – पड़ने पर, **जल** – पानी, **जात**- जाता, **बहि** – बहना, **तजि** – छोड़ना, **मीनन** – मछलियाँ, **मोह** – लगाव, **मछरी** – **मछली**. **नीर** – जल, **तऊ** – तब भी, **न** – नहीं, **छाँड़ति** – छोड़ती, **छोह**- प्रेम (प्यार)।

3. ***तरूवर फल नहिं खात है, सरवर पियत न पान।***
कहि रहीम परकाज हित, संपति-सचहिं सुजान ।।3।।

प्रसंग:- रहीम दास जी ने इस दोहे में मनुष्य में पाए जाने वाले परोपकार की भाव को प्रकट किया है अथार्थ दूसरों की भलाई करना।
व्याख्या:- रहीम दास जी कहते हैं कि जिस प्रकार वृक्ष अपने फल कभी नहीं खाता सरोवर अपने द्वारा संचित किया गया जल कभी नहीं पीता उसी प्रकार सज्जन और विद्वान लोग अपने द्वारा संग्रह किए गए धन का उपयोग अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों की भलाई में करते है।
शब्दार्थ:- तरुवर – वृक्ष, **नहिं** – नहीं, **खात** – खाना, **सरवर** – सरोवर (तालाब), **पियत** – पीते, **पान** – पानी, **कहि** – कहते, **परकाज** – दुसरो के लिए काम, **हित** – भलाई, **सम्पति** – धन (दौलत), **सचहिं** – संग्रह (बचत), **सुजान** – सज्जन/ज्ञानी।

4. ***थोथे बादर क्वार के, ज्यों रहीम घहरात।***
धनी पुरुष निर्धन भए, करें पाछिली बात ।।4।।

प्रसंग:- रहीम दास जी ने इस दोहे के माध्यम से बताना चाहते है कि मनुष्य निर्धन होने के बाद भी पुराने दिनों के ऐश्वर्य की बातें करते रहते है।
व्याख्या:- रहीम दास जी कहते हैं कि जिस प्रकार आश्विन के महीने में जो बादल आते है वो थोथे होते है। वे केवल गरजते है लेकिन बरसते नहीं है उसी प्रकार धनी पुरुष निर्धन होने पर अपने सुख में बिताए हुए दिनों की बातें करता रहता है जिसका वर्तमान में कोई मतलब नहीं होता है। वह अपने सुख में बिताए हुए पलों को याद करते रहते है लेकिन अपनी वर्तमान स्थिति में कोई सुधार नहीं करते है।
शब्दार्थ:- थोथे – खोखले. **बादर** – बादल, **क्वार** – आश्विन (सितंबर-अक्टूबर का महीना), **ज्यों**- जैसे, **घहरात** – गर्जना, **धनी** – धनवान, **निर्धन** – गरीब, **भए** – हो जाते है, **पाछिली** – पिछली (पुरानी)।

---

5. ***धरती की-सी रीत है, सीत घाम औ मेह।***
जैसी परे सो सहि रहे, त्यों रहीम यह देह।।5।।

प्रसंग:- इस दोहे में रहीम दास जी ने मनुष्य के शरीर की तुलना धरती से की है।
व्याख्या:- रहीम दास जी कहते हैं कि जिस प्रकार हमारी धरती सर्दी, गर्मी, बरसात के मौसम को एक समान भाव से जेल लेती है। उसी प्रकार हमारे शरीर में भी वैसे ही क्षमता होनी चाहिए हम जीवन में आने वाले परिवर्तन और सुख-दुख को सहज रूप से स्वीकार कर सकें।
शब्दार्थ:- रीत- ढंग, **सीत**- सर्दी (ठंड), **घाम** – धुप, **औ**- और, **मेह**- बारिश, **परे** – पड़ना, **सो**- सारा, **सहि**- सहना, **त्यों** – वैसे, **देह**- शरीर।

पाठ-11 रहीम के दोहे

---

1. पाठ में दिए गए दोहों की कोई पंक्ति कथन है और कोई कथन को प्रमाणित करनेवाला उदाहरण। इन दोनों प्रकार की पंक्तियों को पहचान कर अलग-अलग लिखिए।

उत्तर:- उदाहरण वाले दोहे

तरवर फल नहिं खात है, सरवर पियत न पान।
कहि रहीम परकाज हित, संपति-संचहि सुजान।।

थोथे बादर क्वार के, ज्यों रहीम घहरात।
धनी पुरुष निर्धन भए, करें पाछिली बात।।
धरती की-सी रीत है, सीत घाम औ मेह।
जैसी परे सो सहि रहे, त्यों रहीम यह देह।।

कथन वाले दोहे

जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाँड़ति छोह।।

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत।।

2. रहीम ने क्वार के मास में गरजनेवाले बादलों की तुलना ऐसे निर्धन व्यक्तियों से क्यों की है जो पहले कभी धनी थे और बीती बातों को बताकर दूसरों को प्रभावित करना चाहते हैं? दोहे के आधार पर आप सावन के बरसने और गरजनेवाले बादलों के विषय में क्या कहना चाहेंगे?

उत्तर:- क्वार के मास में गरजनेवाले बादल केवल गरजकर रह जाते हैं, बरसते नहीं हैं ठीक उसी प्रकार जो पहले कभी धनी थे और वे अपनी बीती बातों को बताकर दूसरों को प्रभावित करना चाहते हैं, वे केवल व्यर्थ में बड़बड़ाकर रह जाते हैं। इसलिए कवि ने क्वार के मास में गरजनेवाले बादलों की तुलना ऐसे निर्धन व्यक्तियों से की है,जो व्यर्थ में संपन्न होने का दिखावा करते है जबकि सावन के बादल गरजने के साथ बरसते भी हैं और लोगों को तृप्त करते हैं।

---

3 .नीचे दिए गए दोहों में बताई गई सच्चाइयों को यदि हम अपने जीवन में उतार लें तो उनके क्या लाभ होंगे? सोचिए और लिखिए -

क) तरुवर फल.....सचहिं सुजान।।

उत्तर:- इस प्रकार की सच्चाई अपनाने से हमारे मन से लोभ की भावना नष्ट हो जाएगी और हम परोपकार की ओर अग्रसर होंगे और हमारा मनुष्य जीवन सार्थक होगा।

• भाषा की बात

4. निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित हिन्दी रूप लिखिए -

जैसे - परे-पड़े (रे, ड़े)

बिपति बादर

मछरी सीत

उत्तर:-

शब्द	शब्दों के प्रचलित हिन्दी रूप
बिपति	विपत्ति
मछरी	मछली
बादर	बादल
सीत	शीत

---

5. नीचे दिए उदाहरण पढ़िए -

क) बनत बहुत बहु रीत।

ख) जाल परे जल जात बहि।

उपर्युक्त उदाहरणों की पहली पंक्ति में 'ब' का प्रयोग कई बार किया गया है और दूसरी में 'ज' का प्रयोग। इस प्रकार बार-बार एक ध्वनि के आने से भाषा की सुंदरता बढ़ जाती है।

वाक्य रचना की इस विशेषता के अन्य उदाहरणों में खोजकर लिखिए।

उत्तर:- 1. सं̲पत्ति सं̲चहि सु̲जान।

2. का̲ली लहर क̲ल्पना का̲ली, का̲ल को̲ठरी का̲ली।

3. चा̲रू चं̲द्र की चं̲चल किरणें।